



वार्ता

मई 2026 वाग्धारा नी

मई 2026

समय से पहले आई भीषण गर्मी : जलवायु परिवर्तन की चेतावनी और आदिवासी भारत पर गहराता संकट

समय से पहले आई लू और बढ़ता तापमान मई का महीना अब केवल गर्मी का मौसम नहीं रहा—यह एक बढ़ते हुए संकट का संकेत बन चुका है। इस वर्ष मार्च के अंत से ही तापमान 44-46°C तक पहुँच गया, जो पहले मई-जून के अंत में देखने को मिलता था। अप्रैल की शुरुआत से शुरू हुई हीटवेव अब मई में और अधिक तीव्र रूप ले चुकी है।

यह बदलाव केवल असामान्य नहीं, बल्कि जलवायु परिवर्तन का स्पष्ट संकेत है। गर्मी अब पहले आती है, अधिक तीव्र होती है और लंबे समय तक बनी रहती है—जिसका सीधा असर जीवन, स्वास्थ्य और आजीविका पर पड़ता है।

बढ़ता तापमान : आंकड़े जो चेतावनी देते हैं: उत्तर-पश्चिम व मध्य भारत पर बढ़ता प्रभाव —

अप्रैल 2026 में राजस्थान, विशेषकर फलोदी और बाड़मेर, देश के सबसे गर्म क्षेत्रों में रहे जहाँ तापमान 44-46°C तक दर्ज किया गया। दिल्ली, अहमदाबाद और नागपुर जैसे शहरों में भी 42-45°C तक तापमान पहुँच गया।

यह हीटवेव सामान्यतः मई-जून में आती थी, लेकिन अब अप्रैल की शुरुआत से ही शुरू हो रही है और मई में अपने चरम पर पहुँच रही है—जो बदलते जलवायु पैटर्न की गंभीरता को दर्शाता है। इसी दौरान दिल्ली में भी तापमान 42-43°C के आसपास पहुँच गया, जबकि अहमदाबाद और नागपुर जैसे शहरों में 43-45°C तक गर्मी दर्ज की गई। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि गर्मी केवल राजस्थान तक सीमित नहीं रही, बल्कि उत्तर-पश्चिम और मध्य भारत के बड़े हिस्से को प्रभावित करते हुए एक व्यापक हीटवेव का रूप ले चुकी थी। यह हीटवेव सामान्यतः मई-जून में आती है लेकिन इस बार अप्रैल के पहले सप्ताह से ही शुरू हो गई।

क्यों बढ़ रही है गर्मी? जलवायु परिवर्तन और मानव गतिविधियों का असर —

पिछले तीन दशकों में भारत में औसत तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ चुका है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह वृद्धि मानवीय गतिविधियों जैसे जीवाश्म ईंधन का जलाना, बड़े पैमाने पर वनों की कटाई, और औद्योगिक उत्सर्जन के कारण हुई है। इसका सीधा असर यह है कि गर्मियाँ अब पहले आती हैं, अधिक तीव्र होती हैं, और लंबे समय तक रहती हैं।

भारतीय मौसम विभाग (IMD) के अनुसार, इस वर्ष फरवरी के अंत से ही उत्तर-पश्चिम और मध्य भारत में हीटवेव की स्थिति



बनने लगी। अरब सागर से आने वाली नमी कम हुई, पश्चिमी विक्षोभ कमजोर हुए, और जेट स्ट्रीम के बदलते मार्ग ने मानसून-पूर्व गर्म हवाओं को रोकने वाले चक्र को छिन्न-भिन्न कर दिया। नतीजा मार्च में ही 'लू' और अप्रैल तक देश के कई हिस्से 'एक्सट्रीम हीट' की श्रेणी में।

यह सिर्फ भारत की समस्या नहीं है। पूरी दुनिया में जलवायु संकट गहरा रहा है। लेकिन भारत विशेष रूप से संवेदनशील है क्योंकि यहाँ की बड़ी आबादी खुले आसमान के नीचे काम करती है कृषि क्षेत्रों में, जंगलों में, निर्माण स्थलों पर।

हीटवेव : स्वास्थ्य आपदा बनती गर्मी

अप्रैल 2026 में राजस्थान सहित पूरे उत्तर-पश्चिम भारत में पड़ी भीषण गर्मी ने जानलेवा रूप ले लिया, जहाँ तापमान कई स्थानों

पर 44°C के आसपास पहुँच गया और हीटवेव के शुरुआती दौर में ही हीट स्ट्रोक के मामलों और मौतों की खबरें सामने आने लगीं।

शुरुआती रिपोर्टों के अनुसार देश के विभिन्न हिस्सों में गर्मी से संबंधित मौतें दर्ज हुईं और विशेषज्ञों ने चेतावनी दी कि यह गर्मी सामान्य से अधिक लंबी और तीव्र हो सकती है। राजस्थान जैसे शुष्क क्षेत्रों में स्थिति और गंभीर रही, जहाँ तेज लू, पानी

की कमी और खुले में काम करने की मजबूरी ने मजदूरों और ग्रामीण आबादी को सबसे अधिक प्रभावित किया। अत्यधिक तापमान के कारण लोग दिन के समय बाहर निकलने से बचने लगे, फिर भी कई मामलों में काम के दौरान अचानक बेहोशी, चक्कर और हीट स्ट्रोक से मौतें हुईं— जो इस बात का संकेत हैं कि जलवायु परिवर्तन के चलते गर्मी अब केवल असुविधा नहीं, बल्कि एक बढ़ता हुआ सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट बन चुकी है।

आदिवासी समुदाय : सबसे अधिक प्रभावित

भारत में करीब 10 करोड़ से अधिक आदिवासी आबादी है जो मुख्यतः राजस्थान, झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, मध्य प्रदेश,

गुजरात और पूर्वोत्तर राज्यों के जंगलों और पहाड़ी इलाकों में रहती है। ये वे क्षेत्र हैं जहाँ जंगल अब पहले से कम घने हैं, नदियाँ सूख रही हैं, और बुनियादी सुविधाएँ अभी भी न के बराबर हैं।

गर्मी की लहर इन समुदायों को कई स्तरों पर तबाह करती है। पहली मार स्वास्थ्य पर पड़ती है हीट स्ट्रोक, निर्जलीकरण, और बच्चों में कुपोषण जानलेवा हो जाता है। दूसरी मार आजीविका पर जंगलों से महुआ, तेंदूपत्ता, और कंदमूल इकट्ठा करना गर्मी में जानलेवा बन जाता है। तीसरी मार पानी पर नदियाँ और तालाब सूख जाते हैं, और आदिवासी महिलाओं को कई किलोमीटर दूर से पानी लाना पड़ता है।

पानी का संकट : गर्मी की जड़—सूखते स्रोत और बढ़ती दूरी आदिवासी क्षेत्रों में जल संकट गर्मी के साथ और विकराल हो जाता है। केंद्रीय भूजल बोर्ड की रिपोर्टें बताती हैं कि राजस्थान, झारखंड, छत्तीसगढ़ और ओडिशा के आदिवासी बहुल जिलों में भूजल स्तर हर साल औसतन एक मीटर नीचे जा रहा है। मार्च-अप्रैल तक जो कुएँ और तालाब सूख जाते थे, वे अब जनवरी-फरवरी में ही सूख जाते हैं।

पानी के अभाव में न खाना बनता है, न पशु बचते हैं, न खेती होती है। महिलाएँ रोज सुबह 3-4 बजे उठकर पानी की तलाश में निकलती हैं। बच्चे स्कूल नहीं जा पाते क्योंकि परिवार को पानी चाहिए। और जो पानी मिलता है, वह अक्सर दूषित होता है जिससे

पेट की बीमारियाँ और फैलती हैं। राजस्थान में पहले से ही 19 जिले पानी की गंभीर कमी से जूझ रहे थे और इनमें बाँसवाड़ा, झुंजरपुर, उदयपुर और प्रतापगढ़ शामिल थे। 7364 गाँवों को 'सर्वाधिक प्रभावित' श्रेणी में रखा गया था। गर्मी ने जो नदियाँ और कुएँ बचे थे, उन्हें भी सुखा दिया।

आजीविका पर असर : खेती और जंगल दोनों प्रभावित आदिवासी समुदायों की आजीविका मुख्यतः खेती, जंगल से महुआ-तेंदूपत्ता संग्रह, और पशुपालन पर निर्भर है। गर्मी की लहर ने तीनों को एक साथ तबाह किया। राजस्थान और गुजरात में सूखे जैसी स्थिति पैदा होने की चेतावनी दी गई थी। जिसका सबसे पहला असर किसानों और पशुपालकों पर पड़ा।

जलवायु वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि इस सदी के मध्य तक राजस्थान जैसे क्षेत्र वैश्विक स्तर पर उन पहले इलाकों में हो सकते हैं जहाँ तापमान मानव जीवन की सहनीय सीमा पार कर जाए। आर्थिक विषमता तय करेगी कि कौन बचेगा। जिनके पास एयर कंडीशनर है, पक्के मकान हैं, स्वास्थ्य सेवाएँ हैं कृ वे बचेंगे। जिनके पास नहीं हैं यानी राजस्थान के आदिवासी, वे सबसे पहले संकट में आयेगे।

समाधान : पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक उपाय

यह जानना जरूरी है कि आदिवासी समुदाय सदियों से गर्मी और सूखे से जूझते रहे हैं। उनके पारंपरिक ज्ञान में कई समाधान हैं जिन्हें आज फिर से अपनाने की जरूरत है। बहुत से आदिवासी समाजों में मिट्टी के घर बनाने की परंपरा रही है जो अंदर से ठंडे रहते हैं। पाल-घड़ा (मिट्टी का बर्तन जिसमें पानी ठंडा रहता है), नीम और पीपल की छाँव में बैठना, सुबह जल्दी और शाम को काम करना। ये सब पुराने तरीके हैं जो कारगर हैं। पर तेजी से बदलती जलवायु के साथ ये अकेले काफी नहीं हैं।

क्या करें आदिवासी समुदाय — तत्काल उपाय : दोपहर 11 से 4 बजे तक बाहर का काम बंद रखें। ओआरएस (ORS) और नींबू पानी नमक का घोल नियमित लें। घरों में हरे पर्तों/टहनियों की छाया (नीम, सागौन, बांस) और गीले कपड़े लगाएँ।

पशुओं को छाँव और पानी दें। गाँव के किसी एक स्थान को 'ठंडा केंद्र' (Cool Shelter) बनाएँ। पेड़ न काटें अपने आस-पास के जंगल की रक्षा करें।

जलवायु संकट अब नीति-निर्माताओं की मेज पर एक दस्तावेज नहीं, जमीन पर एक आपातकाल है। सरकारों को केंद्र और राज्य दोनों को तत्काल और दीर्घकालिक कदम उठाने होंगे।

● पहली प्राथमिकता होनी चाहिए हर आदिवासी गाँव में 'हीट एक्शन प्लान' लागू करना। इसमें शामिल हों—स्वास्थ्य शिविर, मोबाइल मेडिकल यूनिट, पीने के पानी की गारंटी, और गर्मी की आपात स्थिति में MGNREGA के तहत काम का समय बदलना।

● दूसरी प्राथमिकता है जल संरक्षण। पारंपरिक तालाबों, कुओं और नदियों की सफाई और पुनरुद्धार करना होगा। जल संचयन (Rainwater Harvesting) को हर गाँव में अनिवार्य बनाना होगा। आदिवासी क्षेत्रों में वन पंचायतों को जल प्रबंधन का अधिकार देना होगा।

● तीसरी प्राथमिकता है वनों की रक्षा और विस्तार। वन अधिकार अधिनियम (2006) को सही तरीके से लागू करना होगा ताकि आदिवासी अपने जंगलों के संरक्षक बन सकें। पेड़ों की कटाई पर कड़ाई हो और हरित आवरण बढ़ाने के लिए समुदाय आधारित वृक्षारोपण को प्रोत्साहन मिले।

दीर्घकालिक एजेंडा : सौर ऊर्जा से चलने वाले ठंडे भंडारण की व्यवस्था। जलवायु-अनुकूल कृषि के लिए आदिवासी किसानों को प्रशिक्षण और सहायता। स्वास्थ्य केंद्रों में हीटवेव से संबंधित इलाज को नि:शुल्क और सुलभ बनाना। आदिवासी युवाओं को जलवायु दूत के रूप में तैयार करना।

नागरिकों से अपील : जलवायु संकट के खिलाफ यह सबकी साझा जिम्मेदारी है —

● जलवायु परिवर्तन की यह लड़ाई केवल सरकारों या वैज्ञानिकों की नहीं है। यह हर नागरिक की लड़ाई है। शहरों में बैठकर एयर कंडीशनर चलाने वाले लोग यह नहीं भूलें कि उनकी ऊर्जा खपत उस गर्मी में योगदान देती है जो किसी आदिवासी बच्चे को झुलसा रही है।

● हम क्या कर सकते हैं? बिजली और पानी की बचत, पेड़ लगाना, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, प्लास्टिक और एकल-उपयोग की चीजें छोड़ना ये छोटे-छोटे कदम मिलकर बड़ा फर्क लाते हैं। और सबसे महत्वपूर्ण आदिवासी समुदायों की आवाज को सुनना, उनके अधिकारों के लिए खड़े होना, और उनके पारंपरिक ज्ञान का सम्मान करना।

● भारत दुनिया का सातवाँ सबसे बड़ा देश है और जनसंख्या में पहला। यहाँ का हर निर्णय वैश्विक जलवायु पर असर डालता है। अगर हम अभी नहीं जागे, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें माफ नहीं करेंगी।



हीटवेव से निपटने के लिए जरूरी कदम

● **पहला कदम :** हीटवेव को राज्य-स्तरीय आपदा घोषित किया जाए। CEEW की सिफारिश है कि राज्य आपदा न्यूनीकरण कोष का उपयोग हीट शेल्टर, जल वितरण और चिकित्सा शिविरों के लिए हो। राजस्थान सरकार ने जिलावार एडवाइजरी जारी की लेकिन आदिवासी जिलों तक उसकी पहुँच सुनिश्चित करना अभी बाकी है।

● **दूसरा कदम :** आदिवासी क्षेत्रों में पेयजल की आपात व्यवस्था टैंकर, हैंडपंप की मरम्मत और पारंपरिक जल स्रोतों का पुनरुद्धार। 'सर्वाधिक प्रभावित' गाँवों को प्राथमिकता पर रखा जाए।

● **तीसरा कदम :** MGNREGA के तहत दोपहर 11 से 4 बजे के बीच काम बंद हो, विशेषकर आदिवासी क्षेत्रों में जहाँ मजदूर खुले में काम करते हैं।

● **चौथा कदम :** मृत्यु पंजीकरण में सुधार। हीटस्ट्रोक से होने वाली मौतें 'हृदयघात' में दर्ज होती रहती हैं। सही डेटा के बिना नीति नहीं बनेगी। Heat Watch और Down to Earth ने इसे भारत की बड़ी समस्या बताया है।



प्यारे किसान भाईयों, बहनो, स्वराज साथियों, संगठन के पदाधिकारीयों प्यारे बच्चों एवं वाग्धारा टीम के साथियों आप सभी को जय गुरु! जय स्वराज!

आप सभी जानते हैं की पत्रिका के माध्यम से हर महिने की बात करने और रुबरु होने का आपके साथ मौका मिलता है। अत्यधिक आत्मियता से संवाद को किया जाता है और यह महसूस होता है कि यह पत्रिका जिस जिस व्यक्ति के हाथों तक पहुँचती है या जो भी इसे पढ़ पाता है उन्हें हमारा संदेश आग्रह व समुदाय की बातें जरूर जानने मिलती होंगी। करीब छह वर्ष होने का आ गये है इस पत्रिका को और खुशी की बात यह है कि कभी भी ऐसा नहीं लगा है कि हमारी बातें खत्म हो गई हो इन छह वर्ष में हर बार हमें पत्रिका के बाद ऐसा महसूस होता है कि कई विषय आप तक पहुँचाने रह गए कई बातें आप तक पहुँचाने रह गई उसका कारण यह है कि हम एक पुरे आदिवासी जीवन को जीये। अपना जीवन, हमारी आने वाली पीढ़ियों का जीवन, बच्चों का भविष्य, महिलाओं की सुरक्षा, किसान की आत्मरक्षा वा आत्मस्वाभिमान, हमारी विरासत, हमारी संस्कृति, कई विषयों को लेकर के बात करते हैं, उसी के साथ हमें हमारी समस्याएँ, हमारी आजीविका, हमारे कार्यक्रम उन विषयों पर भी बात करनी होती है तो स्वाभाविक रूप से इन चार पृष्ठों में समस्त बातें आना मुश्किल होती है।

परन्तु हर बार जब मैं लिखता हूँ आप तक पहुँचने के लिए इस विश्वास के साथ लिखता हूँ कि शायद एक-एक शब्द जितना आत्मियता से जितना मन से मैं आपको कहता हूँ वह उतनी ही गहराई से आप तक पहुँचता होगा। और कई इस पत्रिका के माध्यम से जो संदेश आया है उसके सकारात्मक परिणाम भी हमें देखने को मिले हैं। इस छठवें साल के 72वें अंक को बताते हुए खुशी हो रही है कि जब पहली बार गर्मियों में मूंग की खेती के बारे में चर्चा शुरू हुई थी इस पत्रिका के माध्यम से तो ऐसा लग रहा था कि कितना परिवर्तन आया, परन्तु आज क्षेत्र में जगह-जगह मूंग की खेती देखने को मिल रही है, और समुदाय गर्व से कहता है कि ये वाग्धारा के साथ किया गया हमारे संगठनों के प्रयास है, हर घर पेड़, कटहल, कटहल की जिस प्रकार से शुरुआत आज से 10-15 साल पहले की गई थी आज हर घर उसकी गवाई बन रहा है कोरोना के समय जिस प्रकार से शहतूत को ले करके 6 साल पहले जो बीड़ा संगठन के साथियों ने उठाया था आज हर घर में हमें शहतूत देखने को मिलता है और प्रसन्नता होती है कि समुदाय का प्रयास किस प्रकार से फली भूत होता है।

हमारे लिए ये ज्यादा महत्वपूर्ण है कि हम जो सौचें उसका संकल्प लें और उस संकल्प को साकार करने के लिए प्रयास करें और प्रयास को भी नियमित देखते रहें कि हमने जो काम किया है हमने जो गतिविधि की है वो कितना सफल परिणाम दे रही है और उसको हम दूसरे लोगों तक कितना पहुँचा पायें। अगर हम इन प्रयासों को अन्य लोगों तक पहुँचा पाये तो हमारा प्रयास करना सफल होगा।

चूंकि हम भारत के एक बड़े आदिवासी अंचल और प्रकृति से जुड़े हुए क्षेत्र से चर्चा करते हैं हमारी जिम्मेदारी ज्यादा होती है कि हम प्रकृति के इस बदलाव के दौर में, और तकनिक के बढ़ते प्रभाव में हम आने वाली पीढ़ियों को चाहे वो प्रकृति की हो, इंसान की हो या विचारों की हो, सुरक्षित रख पाएँ, संरक्षित रख पाएँ, मजबूत बना पाएँ और उससे हम हमारी खुशियों को स्थाई बना पायें। यह हमारे लिये महत्वपूर्ण है।

चूंकि हर माह आप तक पहुँचता हूँ मैं इस आलेख के माध्यम से और एक आग्रह करता हूँ, पुनः वहीं आग्रह करने जा रहा हूँ। कि ग्रीष्मकालीन खेतों की जुताई महत्वपूर्ण होती है। मुझे विश्वास है जो जो भी लोग इस पत्रिका को पढ़ रहे होंगे, निश्चित ही उनकी जुताई हो चुकी होगी परन्तु फिर भी अगर बाकी रह गई हो जुताई तो समय रहते कर लें। बरसात की फसल के लिए बीज का बंदोबस्त हमारे देशी खाद को खेतों में पहुँचाने की तैयारी करें।

इसी के साथ आग्रह करना चाहूँगा, अगर हर परिवार पांच तरीके के पेड़ के लिए खड़ड़े खोदकर अभी गर्मी से तैयारी करेंगे। तो निश्चित ही वो एक अच्छा पेड़ हमारे आने वाले पीढ़ियों को दे पायेंगे, और वो 25 पेड़ हमारी पहचान बन सकते हैं।

इसी के साथ संगठन से आग्रह है कि हमारे यहाँ कई गांव पेड़ों के नाम पर, जंगलों के नाम से पहचान रखते थे क्या हम हमारे गांव की ऐसी कोई पहचान स्थापित कर सकते हैं हम इसे सोच सकते हैं कि हम किस प्रकार से उसे करें।

जय गुरु। जय स्वराज। जय जगत!

आपका अपना जयेश जोशी

वनोपजों के अनुमानित भाव : नीमच मंडी में विभिन्न वनोपज के भाव नीचे दिए गए हैं -

दिनांक : 23 अप्रैल, 2026

फसल	न्यूनतम भाव	अधिकतम भाव	औसतन भाव	फसल	न्यूनतम भाव	अधिकतम भाव	औसतन भाव	फसल	न्यूनतम भाव	अधिकतम भाव	औसतन भाव
गेंहूँ	2230	3110	2540	अलसी	5900	9445	8900	अश्वगंधा	11200	28500	21250
मक्कापीली	1718	1940	1900	तिल्ली	4260	10351	9526	तुलसी बीज	9000	19100	17050
जौ	2062	2446	2360	मैथी	5000	7800	5900	चिया बीज	8500	21101	18000
लहसुन	5150	19251	9400	धनिया	10500	15000	12000	बहेड़ा	650	1360	1360
चना	4400	5700	5280	अजवाइन	7500	18500	12600	गोंद	3000	3700	3500
मुंगफली	5200	7870	6700	प्याज	451	1309	750	इमली	1900	4300	3500

ध्यान दें : ये भाव अनुमानित हैं और मंडी में फसल की गुणवत्ता और मांग के अनुसार बदल सकते हैं। किसी भी लेन-देन से पहले मंडी में वर्तमान भाव की पुष्टि करना आवश्यक है।



नन्हे कदम, बड़ा भविष्य : प्रारंभिक बाल्यावस्था का महत्व

सुबह का समय है। आंगनवाड़ी के बाहर कुछ छोटे बच्चे खेल रहे हैं। कोई मिट्टी से आकृतियाँ बना रहा है, कोई ताली बजाकर गीत गा रहा है, तो कोई अपनी माँ की उंगली पकड़कर इधर-उधर देख रहा है। यह साधारण-सा दृश्य ही बच्चों की दुनिया है जहाँ हर छोटी गतिविधि, हर आवाज व हर स्पर्श उनके सीखने का हिस्सा बनता है।



जीवन के शुरुआती वर्ष बच्चों के लिए बहुत खास होते हैं। यही वह समय है जब उनका मस्तिष्क तेजी से विकसित होता है और वे अपने आसपास की दुनिया को समझना शुरू करते हैं। इस समय में मिलने वाले अनुभव उनके पूरे जीवन की दिशा तय करते हैं। इसलिए यह जरूरी है कि इस अवस्था को केवल पालन-पोषण का समय न मानकर, इसे सीखने और विकास का सबसे महत्वपूर्ण अवसर समझा जाए।

बाल्यावस्था का अर्थ, परिभाषा और विशेषताएँ -

बाल्यावस्था जीवन का वह प्रारंभिक चरण है जो जन्म से लेकर लगभग 6-8 वर्ष की आयु तक फैला होता है। यह वह समय होता है जब बच्चे का शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास तेजी से होता है। इस अवस्था को सीखने की नींव का समय कहा जाता है क्योंकि इसी दौरान बच्चा अपने आसपास की दुनिया को समझने लगता है। वह सुनकर, देखकर, छूकर और अनुभव करके सीखता है।

बाल्यावस्था की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें मस्तिष्क का विकास अत्यंत तीव्र गति से होता है। बच्चे स्वभाव से जिज्ञासु होते हैं और हर चीज को जानने की कोशिश करते हैं। वे खेल के माध्यम से सीखते हैं, अनुकरण करते हैं और धीरे-धीरे भाषा, व्यवहार और सामाजिक संबंधों को समझने लगते हैं। इस अवस्था में बच्चों को स्नेह, सुरक्षा और संवाद की विशेष आवश्यकता होती है। यदि उन्हें सकारात्मक वातावरण मिलता है, तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे खुले मन से सीखते हैं।

बचपन के शुरुआती साल : सीखने की पहली पाठशाला

छोटे बच्चों के लिए घर और आसपास का वातावरण ही उनकी पहली पाठशाला होता है। वे किसी किताब से नहीं, बल्कि अपने अनुभवों से सीखते हैं।

जब कोई माँ अपने बच्चे से बात करती है, उसे गोद में लेकर गीत गाती है या उसे कहानी सुनाती है, तब बच्चा केवल सुन नहीं रहा होता बल्कि वह भाषा, भावनाएँ और संबंधों को समझ रहा होता है। इसी तरह जब बच्चा मिट्टी में खेलता है, पानी से खेलता है या अन्य बच्चों के साथ दौड़ता है, तो वह अपने शारीरिक, संतुलन और सामाजिक व्यवहार को सीखता है।

ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में यह सीखना और भी जीवंत होता है। बच्चे खेतों में जाते हैं, बीज बोने और पौधों को उगते हुए देखते हैं, पशुओं के साथ रहते हैं और परिवार के साथ काम करते हुए जीवन के कई महत्वपूर्ण पहलुओं को समझते हैं। लेकिन इन अनुभवों के साथ-साथ यह भी जरूरी है कि बच्चों को सही पोषण, स्वास्थ्य सेवाएँ और सुरक्षित वातावरण मिले, ताकि उनका विकास संतुलित रूप से हो सके।

बाल्यावस्था में शिक्षा का स्वरूप

बाल्यावस्था में शिक्षा का स्वरूप पारंपरिक शिक्षा से अलग होता है। इस अवस्था में शिक्षा का उद्देश्य केवल पढ़ना-लिखना सिखाना नहीं होता, बल्कि बच्चे के समग्र विकास को सुनिश्चित करना होता है।

इस उम्र में बच्चे खेल-खेल में सीखते हैं। कहानी, गीत, चित्र, नाटक और गतिविधियाँ उनके सीखने के मुख्य साधन होते हैं। यदि शिक्षा को रोचक और अनुभव आधारित बनाया जाए, तो बच्चे अधिक सक्रिय रूप से उसमें भाग लेते हैं। यह भी जरूरी है कि शिक्षा बच्चों की भाषा, संस्कृति और परिवेश के अनुरूप हो। जब बच्चा अपनी भाषा और अपने अनुभवों से जुड़कर सीखता है, तो वह अधिक गहराई से समझ पाता है। एक अच्छा सीखने का वातावरण वह होता है जहाँ बच्चे को डर या दबाव न हो, बल्कि उसे अपनी बात रखने, प्रश्न पूछने और प्रयोग करने की स्वतंत्रता मिले।

माता-पिता की भूमिका : सीखने की पहली नींव

माता-पिता बच्चे के जीवन के पहले शिक्षक होते हैं। बच्चा सबसे पहले अपने माता-पिता से ही जुड़ता है और उन्हीं से सीखना शुरू करता है। जब माता-पिता बच्चे के साथ समय बिताते हैं, उसकी बातों को ध्यान से सुनते हैं और उसे प्रोत्साहित करते हैं, तो बच्चे में आत्मविश्वास विकसित होता है। रोजमर्रा की छोटी-छोटी गतिविधियाँ जैसे-कहानी सुनाना, खेलना, बातचीत करना बच्चों के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती हैं।

माता-पिता का स्नेह और सुरक्षा बच्चों को भावनात्मक रूप से मजबूत बनाते हैं। यदि बच्चा अपने घर में सुरक्षित और प्रिय महसूस करता है, तो वह नई चीजें सीखने के लिए अधिक उत्साहित रहता है। इसके साथ ही, माता-पिता को यह भी समझना जरूरी है कि बच्चे के शुरुआती वर्षों में सही पोषण, स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाएँ कितनी महत्वपूर्ण हैं।

बाल स्वराज समूह की भूमिका : बच्चों का अपना मंच -

बाल स्वराज समूह बच्चों के लिए एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहाँ वे एक साथ आकर सीख सकते हैं, खेल सकते हैं और अपनी बात रख सकते हैं।

इस समूह में नियमित गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं जैसे कहानी, गीत, खेल, नाटक और चर्चा। ये गतिविधियाँ बच्चों को सीखने के साथ-साथ आनंद भी देती हैं और उनमें आत्मविश्वास बढ़ाती हैं। बाल स्वराज समूह बच्चों को यह अवसर देता है कि वे अपनी समस्याओं और विचारों को साझा करें। इससे उनमें नेतृत्व क्षमता विकसित होती है और वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होते हैं। कई बार देखा जाता है कि बड़े बच्चे छोटे बच्चों की मदद करते हैं, उन्हें सिखाते हैं और उनके साथ खेलते हैं। इससे आपसी सहयोग और सीखने का वातावरण बनता है।

समुदाय की भूमिका : सहयोग से सशक्त बचपन -

समुदाय बच्चों के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता

है। यदि गांव या मोहल्ले में सकारात्मक वातावरण हो, तो बच्चों का विकास स्वाभाविक रूप से बेहतर होता है। समुदाय यह सुनिश्चित कर सकता है कि आंगनवाड़ी केंद्र और स्कूल सही तरीके से चलें और सभी बच्चों को उनका लाभ मिले। बच्चों के लिए सुरक्षित स्थान, स्वच्छ वातावरण और खेलने के अवसर उपलब्ध कराना भी समुदाय की जिम्मेदारी है। समुदाय के सदस्य जैसे शिक्षक, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और युवा मिलकर बच्चों के विकास में सहयोग कर सकते हैं। वे माता-पिता को जागरूक कर सकते हैं और बच्चों के अधिकारों की रक्षा कर सकते हैं।

जब अवसर छूट जाते हैं व क्या किया जा सकता है -

कई बार परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं कि बच्चे जरूरी अवसरों से वंचित रह जाते हैं। पोषण की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव, असुरक्षित वातावरण और समय से पहले जिम्मेदारियों का बोझ बच्चों के विकास को प्रभावित करता है। लेकिन यदि समुदाय जागरूक हो और छोटे-छोटे प्रयास करे तो इन चुनौतियों को कम किया जा सकता है। आंगनवाड़ी की नियमितता, माता-पिता के साथ संवाद, बच्चों के लिए गतिविधियाँ और सुरक्षित वातावरण ये सभी कदम बच्चों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

निष्कर्ष - प्रारंभिक बाल्यावस्था जीवन का सबसे महत्वपूर्ण चरण है। यही वह समय है जब बच्चों के भविष्य की नींव रखी जाती है। यदि माता-पिता का स्नेह, बाल स्वराज समूह का सहयोग और समुदाय का समर्थन एक साथ मिल जाए, तो हर बच्चे को एक सुरक्षित, खुशहाल और सीखने से भरपूर बचपन मिल सकता है। यह केवल एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक अवसर है एक ऐसे समाज के निर्माण का अवसर जो संवेदनशील, जागरूक और सशक्त हो।

क्योंकि नन्हे कदमों से ही एक मजबूत और सशक्त भविष्य की शुरुआत होती है।



कई बार परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं कि बच्चे जरूरी अवसरों से वंचित रह जाते हैं। पोषण की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव, असुरक्षित वातावरण और समय से पहले जिम्मेदारियों का बोझ बच्चों के विकास को प्रभावित करता है। लेकिन यदि समुदाय जागरूक हो और छोटे-छोटे प्रयास करे तो इन चुनौतियों को कम किया जा सकता है। आंगनवाड़ी की नियमितता, माता-पिता के साथ संवाद, बच्चों के लिए गतिविधियाँ और सुरक्षित वातावरण ये सभी कदम बच्चों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

गर्मी के अधिक तापमान का पशुधन पर प्रभाव

सामान्य से अधिक तापमान की स्थिति में पशुधन में हीट स्ट्रेस उत्पन्न होता है, जिससे उनकी शारीरिक तापमान नियंत्रण प्रणाली प्रभावित हो जाती है। वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार जब तापमान-आर्द्रता सूचकांक सामान्य सीमा से ऊपर जाता है, तो पशु शरीर से गर्मी को सही ढंग से निकाल नहीं पाते, जिससे शरीर का आंतरिक तापमान बढ़ जाता है और श्वसन दर तेज हो जाती है। इस दौरान पशु चारा कम खाते हैं, जिससे ऊर्जा और पोषक तत्वों की कमी होती है तथा पाचन क्रिया धीमी पड़ जाती है। उच्च तापमान के कारण पानी की आवश्यकता बढ़ जाती है और पर्याप्त पानी न मिलने पर निर्जलीकरण हो जाता है, जिससे रक्त संचार प्रभावित होता है और शरीर के अंगों पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। शोध यह भी बताते हैं कि सामान्य से अधिक तापमान से कोर्टिसोल जैसे तनाव हार्मोन बढ़ जाते हैं, जिससे प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती है और पशु संक्रमण के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं। इसके साथ ही प्रजनन हार्मोन प्रभावित होने से गर्भधारण दर कम हो जाती है और दूध उत्पादन में भी गिरावट आती है। इस प्रकार सामान्य से अधिक तापमान पशुधन के श्वसन पाचन, हार्मोनल संतुलन, प्रतिरक्षा क्षमता और उत्पादन सभी पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, जिससे उनका स्वास्थ्य और आर्थिक उत्पादन दोनों प्रभावित होते हैं।

गर्मी में पशुधन की देखभाल कैसे करें ?

निम्न प्रबंधन संबंधी उपाय करके हम इस गर्मी के मौसम में पशुधन को बचा सकते हैं।

चराई का समय - गर्मी के मौसम में पशुधन को चराई के लिए भेजने का समय भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। दिन के अत्यधिक गर्म समय में सीधे धूप में चराई करने से पशुधन में हीट स्ट्रेस बढ़ जाता है, शरीर का तापमान अधिक हो जाता है और ऊर्जा की खपत बढ़ जाती है। इसलिए पशुधन को सुबह जल्दी और शाम के समय चराई के लिए भेजना चाहिए, जब तापमान अपेक्षाकृत कम होता है और धूप तीव्र नहीं होती। इस उपाय से पशुधन को आरामदायक वातावरण में चराई करने का अवसर मिलता है, शरीर का तापसंतुलित रहता है और उनका स्वास्थ्य सुरक्षित रहता है, साथ ही दूध उत्पादन और सामान्य गतिविधियाँ प्रभावित नहीं होती हैं।

गर्मी का असर अब तेज होने लगा है और आने वाले दिनों में कई बार तापमान 47 से 48 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है। ऐसी भीषण गर्मी का असर सिर्फ इंसानों पर ही नहीं, बल्कि गाय-भैंस और अन्य पालतू पशुधन पर भी पड़ता है। अधिक तापमान के कारण पशुधन में हीट स्ट्रेस, भूख में कमी, पानी की अधिक आवश्यकता, शरीर में कमजोरी, साँस फूलना और दूध उत्पादन में गिरावट जैसी समस्याएँ देखने को मिलती हैं। अगर समय पर उचित देखभाल न की जाए तो पशु बीमार भी पड़ सकते हैं, जिससे पशुपालकों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए गर्मी के मौसम में पशुपालकों के लिए यह बहुत जरूरी हो जाता है कि वे अपने पशुधन को ठंडी और हवादार जगह पर रखें, पर्याप्त मात्रा में साफ और ठंडा पानी उपलब्ध कराएँ, हरे चारे के साथ संतुलित आहार दें तथा दोपहर की तेज धूप से बचाने के लिए छायादार व्यवस्था करें। इसके अलावा पशुधन को समय-समय पर नहलाना, शेड में पानी का छिड़काव करना और खनिज मिश्रण देना भी लाभदायक रहता है।

पानी की नियमित व पर्याप्त आपूर्ति - गर्मी के मौसम में पशुधन के लिए पानी की नियमित और पर्याप्त आपूर्ति बेहद जरूरी है। उच्च तापमान में पशुधन का शरीर अधिक पसीना और श्वसन के माध्यम से पानी खोता है, जिससे निर्जलीकरण का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए दिन में 3 से 4 बार साफ और ठंडा पानी पिलाना आवश्यक है। ध्यान रखें कि पानी गर्म न हो, क्योंकि गर्म



पानी से पशुधन का पाचन प्रभावित हो सकता है और उन्हें बीमारी का खतरा हो सकता है। इस प्रकार नियमित और ठंडा पानी प्रदान करने से पशुधन का शारीरिक ताप संतुलन बना रहता है व उनका स्वास्थ्य सुरक्षित रहता है।

आहार प्रबंधन गर्मी - के मौसम में पशुधन के आहार प्रबंधन पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। उच्च तापमान में पशु सामान्य से कम चारा खाते हैं और पाचन क्रिया धीमी हो जाती है। इसलिए इस समय सूखे चारे की मात्रा कम करके उसे भिगोकर देना लाभकारी होता है, जिससे पाचन में सहूलियत होती है और पानी की कमी भी कुछ हद तक पूरी होती है। इसके साथ ही हरे चारे का अधिक सेवन करवाना चाहिए, क्योंकि हरे चारे में पानी की मात्रा अधिक होती है, जो पशुधन को शारीरिक ठंडक और हाइड्रेशन प्रदान करता है, और हीट स्ट्रेस को कम करने में मदद करता है।

बाड़े के फर्श की सही व्यवस्था - गर्मी के मौसम में पशुधन के स्वास्थ्य और आराम के लिए बाड़े के फर्श की सही व्यवस्था बहुत जरूरी है। गर्म फर्श से शरीर का ताप बढ़ जाता है और हीट स्ट्रेस की संभावना बढ़ जाती है। क्योंकि उच्च तापमान से हीट स्ट्रेस उत्पन्न होता है, जो शारीरिक तापमान नियंत्रण, श्वसन दर, पाचन और दूध उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। इसलिए पशुधन को हवादार और सूखी जगह में रखना चाहिए, जहाँ पर्याप्त छाया उपलब्ध हो। यदि बाड़े या शेड में अत्यधिक गर्मी हो, तो पर्यावरणीय नियंत्रण के लिए गीले बोरे या गीले पर्दा का उपयोग किया जा सकता है। यह तकनीक आसपास के तापमान को कम करने में मदद करती है और पशुधन को शारीरिक ताप संतुलन बनाए रखने में राहत देती है।

निर्जलीकरण की स्थिति - गर्मी के मौसम में पशुधन में निर्जलीकरण (Dehydration) एक आम और गंभीर समस्या बन सकती है। वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो उच्च तापमान व हीट स्ट्रेस के कारण पशु शरीर से अधिक पानी खोते हैं, जिससे शरीर में तरल पदार्थ की कमी, कमजोरी और मानसिक उलझान जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। इस स्थिति में पशुधन के लिए साफ और ठंडा पानी नियमित रूप से उपलब्ध कराना सबसे महत्वपूर्ण उपाय है। इसके अलावा पानी में इलेक्ट्रोलाइट्स या खनिज मिश्रण मिलाना लाभकारी होता है, क्योंकि यह शरीर में पानी और आवश्यक मिनरल्स का संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। हल्का गन्ना या हरी घास भी पशुधन को अतिरिक्त जल प्रदान करने और शरीर की ठंडक बनाए रखने में सहायक होते हैं। इस प्रकार उचित जलापूर्ति और मिनरल संतुलन के माध्यम से निर्जलीकरण के प्रभाव को कम किया जा सकता है और पशुधन का स्वास्थ्य सुरक्षित रहता है।

जमीन के ऊपर सुखी टाट, बोरी या पशुधन के लिए विशेष गादी बिछाना लाभकारी होता है। यह उन्हें आरामदायक सतह प्रदान करता है, शरीर की गर्मी को कम करता है और पैरों व जोड़ों पर पड़ने वाले दबाव को घटाता है। इस तरह बाड़े के फर्श की उचित व्यवस्था पशुधन के स्वास्थ्य और उत्पादकता दोनों के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

ढलान वाली जमीन से समृद्धि तक का सफर



राजस्थान के बांसवाड़ा जिले का थिकली बादरा गाँव जहाँ की जमीन ढलानदार है, बारिश का कोई भरोसा नहीं, और परंपरा की जड़ें इतनी गहरी हैं कि बदलाव की हवा भी उन्हीं हिला नहीं पाती थी। यहाँ की महिलाओं का न तो अनुभव था, न प्रशिक्षण। खेतों में काम तो करती थीं, लेकिन उनकी आवाज खेत की मेड़ से आगे नहीं जाती थी। निर्णय लेने की मेज पर उनके लिए कोई जगह नहीं थी। लेकिन इसी गाँव की चार महिलाओं कल्पना पारगी, संतोष पारगी, मंजुला पारगी और लालीदेवी पारगी ने मिलकर एक ऐसी कहानी लिखी जो न केवल उनके परिवारों के लिए, बल्कि पूरे क्षेत्र की महिलाओं के लिए प्रेरणा बन गई। इन्होंने मात्र 2 बीघा जमीन पर अमेरिकन मक्का की सामुदायिक खेती करके लगभग एक लाख रुपये की आय अर्जित की। यह सिर्फ पैसों की बात नहीं है यह सोच एक नई शुरुआत है। थिकली बादरा की महिलाओं का जीवन से एक निश्चित लय में बँधा था। सूरज उगते ही खेत की ओर निकलना, दिन भर परिश्रम करना, और शाम को घर लौटकर घरेलू जिम्मेदारियों में डूब जाना। मेहनत उनकी थी, लेकिन खेती से जुड़े सभी निर्णय कौन सी फसल बोएंगे, बीज कहाँ से लाएंगे, उपज कहाँ बेचेंगे और कैसे खर्च होंगे ये सब पुरुषों के दायरे में आते थे। कल्पना पारगी बताती है कि "हम खेत में दिन भर काम करते थे, लेकिन खेती के फसले पुरुष ही लेते थे। आमदनी कम होती थी और खर्च ज्यादा। कई बार कर्ज लेना पड़ता था। तब लगा कि कुछ नया करना जरूरी है।"

ढलान वाली जमीन की अपनी सीमाएँ होती हैं। मिट्टी बह जाती है, पानी टिकता नहीं, और उत्पादन कभी स्थिर नहीं रहता। बारिश पर निर्भर खेती में एक मौसम की असफलता पूरे साल को संकट में डाल देती थी। जब बारिश कम होती, फसल सूख जाती। जब ज्यादा होती, पानी बहकर निकल जाता। इस चक्र में परिवार आर्थिक रूप से कमजोर

बने रहते थे। संतोष पारगी इस दर्द को बयान करती हैं "बारिश कम हो जाए तो फसल खराब हो जाती थी। कई बार मजदूरी करनी पड़ती थी। घर का खर्च चलाना मुश्किल हो जाता था।" हर बड़े बदलाव की शुरुआत किसी छोटी-सी दस्तक से होती है। थिकली बादरा में वाग्धारा के सामुदायिक सहजकर्ता ललिता मकवाना इन, महिलाओं से मिली, उनकी बात सुनी और उन्हें संगठित होने की प्रेरणा दी। शुरुआत समिदायिक बैठकों से हुई। इन बैठकों में महिलाओं को सरकारी योजनाओं की जानकारी दी गई कौन-कौन सी योजनाएँ हैं, उनसे कैसे लाभ उठाया जा सकता है, आवेदन की प्रक्रिया क्या है। साथ ही समूह प्रबंधन, और आजीविका के नए विकल्पों पर भी चर्चा हुई। इन महिलाओं को सक्षम समूह से जोड़ा गया और बैठकों के दौरान जब सामुदायिक खेती का विचार सामने आया, तो यह इन महिलाओं के लिए बिल्कुल नया था। पारंपरिक खेती में हर परिवार अपनी-अपनी जमीन पर अकेले काम करता था। जमीनें छोटी, संसाधन सीमित और जोखिम बड़ा। सामुदायिक खेती का विचार यह था कि सब मिलकर एक जमीन पर काम करें, लागत बाँटें, मेहनत बाँटें और फायदा भी बराबर बाँटें। इसी दौरान अमेरिकन मक्का की खेती का सुझाव सामने आया। यह फसल पारंपरिक मक्के से अलग थी ऊँची पैदावार, बाजार में अच्छी माँग और बिक्री के लिए दूर जाने की जरूरत नहीं।

चारों महिलाओं ने आपस में विचार किया। जोखिम था नई फसल, नई तकनीक और परिवार की आशंकाएँ। लेकिन सामूहिक साहस जमीन ढलानदार है, बारिश का उसे अमल में लाना दूसरी महिलाओं के सामने कई व्यावहारिक बाधाएँ एक साथ खड़ी थीं। परिवार के सदस्य इस नए प्रयोग को लेकर संशुक्ति थे। नुकसान का डर स्वाभाविक था। लालीदेवी पारगी बताती हैं "घर में लोगों ने कहा कि नई खेती में जोखिम है। लेकिन हमने समझाया और धीरे-धीरे परिवार तैयार हुआ।"

संसाधनों की कमी भी एक बड़ी चुनौती थी। बीज, सिंचाई, खेत की तैयारी इन सबके लिए पैसे और साधन चाहिए थे। महिलाओं ने समूह के माध्यम से इस समस्या का हल निकाला। सामूहिक खरीद से लागत कम हुई और सामूहिक प्रयास से काम आसान। अमेरिकन मक्का की खेती का न तो अनुभव था, न प्रशिक्षण। यहाँ वाग्धारा ने फिर अहम भूमिका निभाई। संस्था ने व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया बुवाई का सही समय, जैविक खाद, पानी की जरूरत, कीट नियंत्रण। इस प्रशिक्षण ने महिलाओं को न केवल तकनीकी जानकारी दी, बल्कि उनमें यह भरोसा भी जगाया कि वे सही दिशा में हैं। फिर चारों महिलाओं ने 2 बीघा का एक संयुक्त खेत तैयार किया। खेत की जुताई से लेकर बुवाई तक, हर काम मिल-जुलकर हुआ। कोई अकेला नहीं था न मेहनत में, न जिम्मेदारी में। हर दिन ये महिलाएँ खेत में जातीं, फसल की देखभाल करतीं और धीरे-धीरे खेत में अमेरिकन मक्का के पौधे लहलहाने लगे।

जब फसल तैयार हुई और उदयपुर-बांसवाड़ा के व्यापारी के सम्पर्क कर बाजारों में अमेरिकन मक्का की उपज बिकी, की और चारों महिलाओं ने मिलकर लगभग एक लाख रुपये की आय अर्जित की। यह राशि उनके लिए महज एक आंकड़ा नहीं थी।

यह उनकी क्षमता का प्रमाण था। एक लाख रुपये की आय का मतलब था बच्चों की पढ़ाई के लिए पैसे, घर की जरूरतें पूरी करने की क्षमता और कर्ज से मुक्ति की संभावना। लेकिन इससे भी बड़ी बात थी पहचान। अब ये चारों महिलाएँ केवल खेत मजदूर नहीं, बल्कि किसान के रूप में पहचानी जाने लगीं और यह पहचान किसी ने उन्हें नहीं दी,

उन्होंने खुद अर्जित की। सफलता का असर केवल बैंक खाते पर नहीं, मन पर भी पड़ता है। इस अनुभव के बाद इन महिलाओं में एक नया आत्मविश्वास जागा। वे अब खुलकर बोलती हैं, निर्णयों में भाग लेती हैं और दूसरों को राह दिखाती हैं। कल्पना, संतोष, मंजुला और लालीदेवी, ये चारों अब गाँव में एक नई भूमिका निभा रही हैं। वे अपने अनुभव साझा करती हैं, नई महिलाओं को सामुदायिक खेती की ओर प्रेरित करती हैं। 2 बीघा जमीन, चार महिलाएँ, एक लाख रुपये - ये संख्याएँ छोटी लग सकती हैं, लेकिन इनके पीछे जो संघर्ष है, जो हिम्मत है, जो एकजुटता है। ढलान वाली जमीन पर भी फसल लहलहा सकती है, बस इरादे मजबूत हों थिकली बादरा की ये चार महिलाएँ यही साबित कर चुकी हैं, और उनकी यह यात्रा यहीं नहीं रुकती यह तो बस एक नई शुरुआत है।



बदलते मौसम में खेती : समझ, तैयारी और टिकाऊ समाधान जलवायु परिवर्तन के दौर में स्थानीय ज्ञान, सामुदायिक प्रयास और अनुकूल खेती की दिशा

बदलता मौसम, नई चुनौती : जलवायु परिवर्तन का खेती पर गहरा प्रभाव आज खेती एक ऐसे दौर से गुजर रही है जहाँ मौसम अब भरोसेमंद नहीं रहा। कभी तेज कभी अचानक बढ़ जाती है, कभी बरसात समय से पहले या बहुत देर से होती है, तो कभी लंबे समय तक सूखा पड़ जाता है। ये बदलाव केवल मौसम की अनियमितताएँ नहीं, बल्कि जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट संकेत हैं, जो खेती और आजीविका दोनों को प्रभावित कर रहे हैं। राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश जैसे क्षेत्रों में, जहाँ खेती मुख्यतः वर्षा पर निर्भर है, यह संकट और भी गहरा है। ऐसे में जरूरी है कि हम इन बदलावों को समझकर अपनी खेती को उनके अनुरूप ढालें — तभी हम सुरक्षित और टिकाऊ भविष्य की ओर बढ़ सकते हैं।

परंपरागत ज्ञान और नई समझ का संतुलन : प्रकृति के संकेतों से विज्ञान तक का सफर हमारे पूर्वज प्रकृति के संकेतों को समझकर खेती करते थे। पेड़ों की पत्तियों, पक्षियों का व्यवहार, हवा और बादलों की दिशा उनके मार्गदर्शक होते थे। लेकिन आज इन संकेतों में भी अस्थिरता आ गई है। मौसम का चक्र बदल रहा है, तापमान बढ़ रहा है और वर्षा अनिश्चित हो गई है। यह स्थिति हमें यह सिखाती है कि अब केवल पारंपरिक ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है। बल्कि उसे वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार नई समझ और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ जोड़ना आवश्यक है। यही संतुलन आज की खेती को मजबूत बना सकता है।

मौसम के अनुसार खेती की योजना : समय पर निर्णय, सही फसल का चयन बारिश आधारित खेती में मौसम का थोड़ा-सा बदलाव भी बड़ा असर डालता है। यदि वर्षा देर से होती है, तो बुवाई प्रभावित होती है। अधिक वर्षा से फसल खराब हो सकती है। ऐसे में किसानों को मौसम के बदलते पैटर्न को समझकर अपनी योजना बनानी होगी।

यदि गर्मी का समय बढ़ रहा है, तो जल्दी बुवाई या अधिक तापमान सहन करने वाली फसलें अपनानी चाहिए। यदि वर्षा कम हो रही है, तो कम पानी में उगने वाली किस्मों का चयन आवश्यक है। यह बदलाव केवल विकल्प नहीं, बल्कि समय की जरूरत है। **परम्परागत बीज** : सुरक्षित भविष्य की नींव—स्थानीय बीजों में छिपी सहनशीलता और आत्मनिर्भरता परम्परागत बीज का चयन इस पूरी प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। स्थानीय और पारंपरिक बीज केवल फसल नहीं, बल्कि पीढ़ियों के अनुभव और ज्ञान का संग्रह होते हैं। ये बीज अपने क्षेत्र की मिट्टी, जलवायु और परिस्थितियों के अनुसार ढल चुके होते हैं, इसलिए इनमें सूखा सहन करने, कम पानी में बढ़ने और कीटों से लड़ने की अधिक क्षमता होती है। आदिवासी समुदायों में देसी बीजों का संरक्षण और उपयोग न केवल खेती को सुरक्षित बनाता है, बल्कि यह आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक पहचान को भी मजबूत करता है। आज जरूरत है कि हम इन बीजों को सहेजें, साझा करें और नई पीढ़ी तक पहुंचाएं।

जीवित मिट्टी, मजबूत फसल : मिट्टी स्वास्थ्य खेती की रीढ़ होती है। यदि मिट्टी स्वस्थ है, तो फसल भी मजबूत होगी और जलवायु के झटकों को बेहतर तरीके से सहन कर पाएगी। जैविक तत्वों से भरपूर मिट्टी पानी को अधिक समय तक रोककर रखती है और पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करती है। इसके लिए गोबर की खाद, कम्पोस्ट, हरी खाद और फसल अवशेषों का उपयोग बेहद प्रभावी होता है। इसके विपरीत, रासायनिक खादों का अत्यधिक उपयोग मिट्टी को धीरे-धीरे कमजोर कर देता है, जिससे उसकी जल धारण क्षमता और उर्वरता कम हो जाती है। इसलिए मिट्टी को जीवित और पोषक बनाए रखना ही जलवायु परिवर्तन के खिलाफ सबसे मजबूत रक्षा है।

जल संरक्षण : हर बूंद की अहमियत : जल संरक्षण आज की खेती की सबसे बड़ी जरूरत बन चुकी है। खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ पानी की कमी है, वहाँ हर बूंद की कीमत है। परंपरागत तरीके जैसे मेड़बंदी, खेत तालाब, चेकडैम, और मल्टिचिंग न केवल पानी को रोकते हैं, बल्कि मिट्टी की नमी को भी बनाए रखते हैं। जब खेत में नमी बनी रहती है, तो फसल सूखे के समय भी जीवित रह सकती है और उत्पादन पर कम असर पड़ता है। आदिवासी समुदायों में पहले से ही कई ऐसे पारंपरिक जल संरक्षण उपाय मौजूद हैं, जिन्हें फिर से अपनाने और मजबूत करने की आवश्यकता है। यह न केवल खेती को सुरक्षित बनाता है, बल्कि पूरे क्षेत्र के जल स्तर को भी सुधारता है।

फसल विविधता : जोखिम से सुरक्षा फसल विविधता जलवायु संकट के समय में सुरक्षा कवच का काम करती है। यदि किसान केवल एक ही फसल पर निर्भर रहता है, तो उसके खराब होने पर पूरा नुकसान उठाना पड़ता है। लेकिन यदि खेत में अलग-अलग प्रकार की फसलें — जैसे अनाज, दालें, तिलहन और सब्जियाँ — एक साथ लगाई जाएं, तो जोखिम कम हो जाता है। यह न केवल आर्थिक सुरक्षा देता है, बल्कि परिवार के पोषण स्तर को भी मजबूत करता है। विविधता ही प्रकृति का नियम है, और जब हम इसे खेती में अपनाते हैं, तो हम अधिक स्थिर और टिकाऊ प्रणाली का निर्माण करते हैं। पोषणवादी इस दिशा में एक छोटी लेकिन बहुत प्रभावी पहल है। घर के पास छोटी-सी जगह में सब्जियाँ, फल और हरी पत्तेदार पौधे उगाकर परिवार को ताजा और पोषक आहार उपलब्ध कराया जा सकता है। यह खासतौर पर बच्चों और महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। बदलते मौसम में जब बाजार में खाद्य पदार्थों की उपलब्धता और कीमत दोनों प्रभावित होती हैं, तब पोषणवादी एक मजबूत सुरक्षा कवच के रूप में काम करती है।

खेती और पशुपालन का समन्वय खेती और पशुपालन का समन्वय भी जलवायु अनुकूलन का एक सशक्त मॉडल है। पशुओं से मिलने वाला गोबर और मूत्र खेत के लिए जैविक खाद बनाते हैं, जबकि खेत से मिलने वाला चारा पशुओं के लिए उपयोगी होता है। यह एक ऐसा चक्र है जिसमें संसाधनों का सही उपयोग होता है और बाहरी निर्भरता कम हो जाती है। यह मॉडल आदिवासी समुदायों में पारंपरिक रूप से मौजूद रहा है, जिसे आज के समय में और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

सामूहिक प्रयास : अंत में, यह समझना जरूरी है कि जलवायु परिवर्तन जैसी बड़ी चुनौती का समाधान अकेले संभव नहीं है। इसके लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। ग्राम स्वराज समूह, किसान समूह, महिला समूह और युवा मिलकर यदि इस विषय पर नियमित संवाद करें, अनुभव साझा करें और सामूहिक निर्णय लें, तो यह बदलाव अधिक प्रभावी और टिकाऊ होगा। सामुदायिक भागीदारी से ही हम एक ऐसी खेती प्रणाली विकसित कर सकते हैं जो न केवल वर्तमान जलवायु संकट को अग्रसर करे, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी संसाधनों को सुरक्षित रखे। इसलिए, बदलते मौसम को समझना और उसके अनुसार खेती की तैयारी करना केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यह केवल तकनीक का सवाल नहीं है, बल्कि हमारी सोच, हमारी परंपराओं और हमारे सामूहिक प्रयासों का विषय है। जब हम प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर, अपने स्थानीय ज्ञान को अपनाकर और मिलकर आगे बढ़ेंगे, तभी हम जलवायु परिवर्तन की इस चुनौती को अवरुद्ध करेंगे और एक आत्मनिर्भर, समृद्ध और सुरक्षित भविष्य का निर्माण कर सकेंगे।

वर्ण	क्या करें।	कैसे करें।	कब करें।
1	मौसम को समझें	स्थानीय संकेतों और मौसम पूर्वानुमान का उपयोग करें।	सीजन शुरू होने से पहले
2	बीज का चयन	देसी और सूखा सहन करने वाले बीज चुनें।	बुवाई से पहले
3	मिट्टी का सुधार	गोबर खाद, कम्पोस्ट और हरी खाद का उपयोग करें।	खेत की तैयारी के समय
4	जल संरक्षण	मेड़बंदी, मल्टिचिंग, खेत तालाब बनाएं।	मानसून से पहले
5	फसल विविधता अपनाएं	अनाज, दाल, तिलहन व सब्जियों की मिश्रित खेती करें।	बुवाई के समय
6	पोषणवादी विकसित करें	घर के पास सब्जियाँ और फल उगाएं।	पूरे वर्ष
7	पशुपालन को जोड़ें	खाद और चारा का संतुलित उपयोग करें।	निरंतर
8	सामूहिक प्रयास बढ़ाएं	ग्राम बैठक, समूह चर्चा और योजना बनाएं।	नियमित रूप से

जब समाज बदला : वागड़ में दहेज प्रथा पर लगाम-बदलता विकास परितुष्ट

सामुदायिक चेतना से सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तन

दक्षिणी राजस्थान का वागड़ अंचल आज एक ऐसे शांत लेकिन गहरे सामाजिक परिवर्तन का साक्षी बन रहा है, जिसकी गूँज केवल स्थानीय गाँवों तक सीमित नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण बनती जा रही है। कभी यहाँ दहेज प्रथा धीरे-धीरे जड़ें जमाने लगी थी, लेकिन अब यही समाज इसे खत्म करने की दिशा में एक संगठित और प्रभावी अभियान चला रहा है। यह बदलाव केवल एक सामाजिक कुरीति को कम करने की कहानी नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया है। आदिवासी जीवन और संस्कृति का केंद्र रहा है। मील, गारासिया, डामोर, चरपोटा, पारगी, खाँट जैसी जनजातियाँ यहाँ सदियों से प्रकृति के साथ संतुलन में जीवन जीती आई हैं। पारंपरिक रूप से यहाँ विवाह एक सादगीपूर्ण और सामुदायिक आयोजन हुआ करता था, जिसमें आपसी सहमति, सामूहिक भोज और प्रतीकात्मक उपहार ही प्रमुख होते थे। लेकिन 20वीं सदी के उत्तरार्ध में सड़कों के विस्तार, बाजार अर्थव्यवस्था के प्रभाव और बाहरी सामाजिक संपर्कों ने धीरे-धीरे इस व्यवस्था को प्रभावित किया।

जब परंपरा बोझ बन गई — दहेज प्रथा, जो पहले इस समाज में लगभग नहीं थी, धीरे-धीरे प्रतिष्ठा और प्रतिस्पर्धा का प्रतीक बनती गई। नकदी, गहने, मोटरसाइकिल, यहाँ तक कि पशुधन और कृषि उपकरणों की मांग ने विवाह को एक आर्थिक बोझ में बदल दिया। 1980 और 90 के दशक में, जब अधिकांश परिवार सीमित आय पर निर्भर थे, तब दहेज की बढ़ती मांग ने कई परिवारों को कर्ज के जाल में फंसा दिया। बेटियों की शादी टलने लगी, जमीन और पशुधन बिकने लगे, और धीरे-धीरे बेटियों को "आर्थिक बोझ" के रूप में देखने की सोच मजबूत होने लगी।

समुदाय के भीतर से निकला समाधान व सामूहिक संकल्प

इसी संकट की स्थिति में वागड़ के गाँवों में एक नई चेतना का जन्म हुआ। यह परिवर्तन किसी बाहरी आदेश से नहीं, बल्कि समुदाय के भीतर से निकली सामूहिक समझ और अनुभवों का परिणाम था। गाँवों के बुजुर्ग, महिलाएँ और युवा एक साथ आए और उन्होंने यह तय किया कि दहेज प्रथा को अब और आगे नहीं बढ़ने दिया जाएगा। ग्राम सभाओं में दहेज न लेने और न देने के संकल्प लिए गए, और यह संकल्प धीरे-धीरे व्यवहार में बदलने लगा।

ग्रामसभा, समितियाँ व सामूहिक विवाह से बनी नई दिशा पिछले एक दशक में इस दिशा में संगठित प्रयासों ने इस आंदोलन को और मजबूत किया। पंचायत स्तर पर दहेज निषेध समितियों का गठन, जागरूकता रैलियाँ, और सामूहिक विवाह समारोह इन सभी ने मिलकर एक नई सामाजिक दिशा तैयार की। कई स्थानों पर सैकड़ों जोड़ों की शादियाँ एक साथ सादगी पूर्वक आयोजित की गईं, जहाँ दहेज का कोई स्थान नहीं था। इन आयोजनों ने समाज के सामने यह स्पष्ट संदेश रखा कि विवाह का सम्मान खर्च या लेन-देन में नहीं, बल्कि संबंधों की गरिमा में है।

सरकारी योजनाओं और सामाजिक संगठनों का सहयोग भी इस परिवर्तन में महत्वपूर्ण रहा है। बालिका शिक्षा, महिला सशक्तिकरण एवं आर्थिक सहायता से जुड़ी योजनाओं ने परिवारों को यह विश्वास दिलाया कि बेटियाँ बोझ नहीं हैं। बालिका विकास कार्यक्रमों व सामुदायिक पहलों ने लड़कियों को शिक्षा व आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर दिया।

शिक्षा, आत्मनिर्भरता और बढ़ती सामाजिक भागीदारी — इस बदलाव का सबसे गहरा प्रभाव महिलाओं के जीवन में दिखाई देता है। पहले जहाँ किशोरावस्था में ही विवाह तय हो जाते थे, वहीं अब शिक्षा को प्राथमिकता दी जा रही है। बालिकाओं की स्कूल में उपस्थिति बढ़ी है और उच्च शिक्षा तक पहुंचने वाली लड़कियों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। यह बदलाव केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता और सामाजिक भागीदारी में भी झलकता है।

महिलाएँ अब केवल घर तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। सक्षम समूहों के माध्यम से वे जुड़ रही हैं। पारम्परिक हस्तशिल्प, पशुपालन, कृषि आधारित गतिविधियाँ और छोटे

व्यवसाय अब महिलाओं की आय के स्रोत बन रहे हैं। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, बल्कि परिवार और समाज में उनका सम्मान भी बढ़ रहा है।

दहेज प्रथा में कमी का एक बड़ा असर घरेलू जीवन पर भी पड़ा है। विवाह अब अधिक समानता और सम्मान पर आधारित हो रहे हैं। दहेज के कारण होने वाले विवाद और तनाव में कमी आई है, जिससे पारिवारिक संबंध अधिक स्थिर और सहयोगपूर्ण बने हैं। महिलाओं के साथ होने वाले अपमान और हिंसा की घटनाओं में भी गिरावट देखी जा रही है, जो इस बदलाव की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

आर्थिक बदलाव की नई कहानी — आर्थिक दृष्टि से यह परिवर्तन एक छोटी क्रांति से कम नहीं है। जो धन पहले दहेज में खर्च होता था, वह अब खेती, पशुपालन, सिंचाई और छोटे व्यवसायों में निवेश हो रहा है। कई परिवारों ने इस बचत का उपयोग ड्रिप सिंचाई, मुर्गी पालन और स्थानीय उद्यमों में किया है, जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई है।

सांस्कृतिक पुनर्जीवन — सांस्कृतिक स्तर पर भी यह परिवर्तन महत्वपूर्ण है। दहेज प्रथा के प्रभाव से जो परंपराएँ कमजोर हो रही थीं, वे अब पुनर्जीवित हो रही हैं। विवाह समारोहों में अब फिर से लोकगीत, पारंपरिक नृत्य और सामुदायिक भागीदारी का महत्व बढ़ रहा है। सादगी और सांस्कृतिक मूल्यों को प्राथमिकता दी जा रही है, जिससे आदिवासी पहचान और विरासत मजबूत हो रही है।

नई पीढ़ी के नेतृत्व में फेलता सामाजिक अभियान — इस पूरे परिवर्तन में युवा पीढ़ी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षित युवक-युवतियाँ दहेज के खिलाफ अपनी बात रख रहे हैं और बिना दहेज विवाह का उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से वे इस संदेश को व्यापक स्तर पर फैला रहे हैं, जिससे यह गाँवों की सीमाओं से बाहर निकलकर एक बड़े सामाजिक अभियान का रूप ले रहा है।

परंपरा, दबाव और असमानता के बीच संघर्ष जारी — हालाँकि, यह भी सच है कि यह बदलाव अभी पूरी तरह से हर गाँव और हर परिवार तक नहीं पहुंचा है। कुछ दूरस्थ क्षेत्रों में अब भी दहेज प्रथा सामाजिक प्रतिष्ठा या परंपरा के नाम पर जारी है। आर्थिक असमानता, अशिक्षा और सामाजिक दबाव जैसी चुनौतियाँ इस बदलाव की गति को प्रभावित करती हैं। लेकिन जिस तरह से समुदाय, सरकार और सामाजिक संस्थाएँ मिलकर काम कर रही हैं, वह यह संकेत देता है कि इन चुनौतियों को भी धीरे-धीरे पार किया जा सकता है।

समानता, सम्मान और स्वराज आधारित समाज की ओर बढ़ता वागड़ —

वागड़ के आदिवासी समाज में दहेज प्रथा पर लगाम लगाने की यह पहल एक गहरी सामाजिक बदलाव का प्रतीक है। यह केवल एक कुप्रथा को समाप्त करने का प्रयास नहीं, बल्कि एक ऐसे समाज के निर्माण की दिशा में कदम है, जहाँ समानता, सम्मान और आत्मनिर्भरता को सर्वोच्च स्थान दिया जाता है।

आगे की राह और संभावनाएँ — भविष्य की संभावनाएँ इस परिवर्तन को और भी महत्वपूर्ण बनाती हैं। यदि यह प्रयास निरंतर जारी रहा, तो वागड़ क्षेत्र के अन्य हिस्सों के लिए एक उदाहरण बन सकता है। शिक्षा, कौशल विकास, डिजिटल जागरूकता और सामुदायिक नेतृत्व के माध्यम से यह आंदोलन और मजबूत हो सकता है। आज भी मानगढ़ की पहाड़ियों से आती यह आवाज, "दहेज — दापाओ छाकरो ने, बेटेरी मान बढ़ाओ रे" पूरे देश को यह संदेश दे रही है कि जब समुदाय स्वयं परिवर्तन का संकल्प लेता है, तो कोई भी कुरीति ज्यादा समय तक टिक नहीं सकती।



ग्राम स्वराज से विकास तक : बोरी-पी की बदलती तस्वीर

राजस्थान में प्रतापगढ़ के पीपलखूंट खंड का ग्राम बोरी-पी जिले के अन्य सामान्य गाँवों की तरह कई चुनौतियों का सामना कर रहा था। यहाँ की अधिकांश आबादी वर्षा आधारित खेती पर निर्भर थी, जिससे किसान केवल एक ही फसल ले पाते थे और उनकी आय सीमित रहती थी। सिंचाई के साधनों की कमी, जल संरक्षण की व्यवस्था का अभाव और भूमि कटाव जैसी समस्याएँ आम थीं। किसानों की बाजार पर निर्भरता अधिक थी, जिससे खेती की लागत बढ़ रही थी, लेकिन उत्पादन अपेक्षाकृत कम था। गाँव में जागरूकता का स्तर भी कम था। बहुत कम परिवारों को सरकारी योजनाओं की जानकारी थी, जिसके कारण पात्र होने के बावजूद कई लोग लाभ से वंचित रह जाते थे। ग्राम सभा में सहभागिता सीमित थी और सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया कमजोर थी। पशुपालन भी सीमित संसाधनों के कारण प्रभावी नहीं था और स्थानीय स्तर पर खाद की उपलब्धता कम थी। कुल मिलाकर, ग्राम बोरी-पी की स्थिति ऐसी थी जहाँ संसाधनों की कमी और जानकारी के अभाव के कारण विकास की गति धीमी बनी हुई थी।

बोरी-पी में ग्रामीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की शुरुआत सन 2018-2019 में की गई, जिसने समय के साथ एक व्यापक सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की नींव रखी। इस दौरान "ग्राम स्वराज समूह" एवं सक्षम समूह का गठन किया गया। इन समूहों का मुख्य उद्देश्य स्थानीय खेती को बढ़ावा देना, बाहरी बाजार पर निर्भरता कम करना तथा ग्राम स्तर के मुद्दों का समाधान ग्राम सभा के माध्यम से सुनिश्चित करना था। प्रारंभिक दौर में यह प्रयास केवल एक संगठनात्मक पहल था, लेकिन धीरे-धीरे यह ग्रामीणों के जीवन में ठोस बदलाव का माध्यम बन गया। ग्राम स्वराज समूह के गठन के बाद सबसे बड़ा परिवर्तन जागरूकता के स्तर पर देखने को मिला। पहले जहाँ ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं की सीमित जानकारी थी, वहीं अब नियमित बैठकों में चर्चाओं के माध्यम से उन्हें विभिन्न योजनाओं की जानकारी मिलने लगी। इसका सीधा लाभ गाँव के वंचित और जरूरतमंद परिवारों को मिला, जो पहले इन योजनाओं से वंचित रह जाते थे। साथ ही, स्थानीय स्तर पर जैव विविधता को बढ़ावा मिला, पारंपरिक खेती पद्धतियों को पुनर्जीवित किया गया और किसानों ने धीरे-धीरे बाजार पर अपनी निर्भरता कम करना शुरू किया।

इसी दौरान जलग्रहण विकास एवं भू-संरक्षण विभाग द्वारा जलग्रहण विकास परियोजना तथा प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अंतर्गत बोरी ग्राम पंचायत एवं आसपास के क्षेत्रों में कार्य संचालित किए गए। इन योजनाओं का उद्देश्य वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देना, मिट्टी की उर्वरता में सुधार करना, भूमि कटाव को रोकना तथा चारागाहों का विकास करना था। इन प्रयासों ने किसानों को यह समझने में मदद की कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण ही दीर्घकालिक आजीविका का आधार बन सकता है। इन सकारात्मक परिवर्तनों से प्रेरित होकर ग्राम स्वराज समूह के सदस्य गौतमलाल निनामा एवं वनीता देवी ने 2 अक्टूबर 2024 को ग्राम सभा में एक ठोस प्रस्ताव प्रस्तुत किया। यह केवल एक प्रस्ताव नहीं था, बल्कि समुदाय की सामूहिक सोच और भविष्य की दिशा का प्रतीक था। ग्राम सभा द्वारा इस प्रस्ताव को अनुमोदन मिलना इस बात का संकेत था कि अब गाँव के लोग अपने विकास के लिए स्वयं निर्णय लेने और आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। समुदाय की इस पहल को विभाग द्वारा स्वीकार किए जाने के बाद विकास कार्यों को नई गति मिली। इसके फलस्वरूप योजना को सुनियोजित ढंग से लागू करने की प्रक्रिया शुरू हुई और अक्टूबर 2025 में इसका सफल क्रियान्वयन किया गया, जो इस पूरी यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव साबित हुआ।

योजना के अंतर्गत संसाधनों का वितरण चरणबद्ध तरीके से किया गया। सबसे पहले 19 परिवारों को फव्वारा सिस्टम प्रदान किए गए, जिससे सिंचाई की आधुनिक तकनीकों को बढ़ावा मिला। इसके बाद 28 परिवारों को स्प्रेंग पंप वितरित

किए गए, जिससे खेती की दक्षता में वृद्धि हुई। साथ ही 52 परिवारों को पाइप उपलब्ध कराए गए, जिससे जल प्रबंधन बेहतर हुआ। इसके अतिरिक्त 38 परिवारों को पशु सेट प्रदान किए गए, जिससे पशुपालन को सशक्त आधार मिला। इसी

क्रम में 05 हेक्टेयर क्षेत्र में मेड़बंदी का कार्य भी किया गया, जिससे मिट्टी के कटाव को रोका गया और जल संरक्षण को बढ़ावा मिला। इस पूरी पहल ने न केवल संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की, बल्कि किसानों और पशुपालकों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक मजबूत और प्रभावी कदम भी साबित हुई।

इन संसाधनों का प्रभाव ग्रामीण जीवन में स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा। जिन किसानों के पास पहले सिंचाई के सीमित साधन थे, वे अब आधुनिक तकनीकों का उपयोग करने लगे। फव्वारा सिस्टम और सिंचाई पाइप के उपयोग से पानी की बचत हुई और सिंचाई अधिक प्रभावी बनी। इससे फसलों का उत्पादन बढ़ा और गुणवत्ता में भी सुधार हुआ। 23 किसानों ने पहली बार अपनी उपज में अंतर देखा, देखा जिससे इनका आत्मविश्वास बढ़ा और इस बार जायद में पहली बार 09 किसान इन यंत्रों से मुंग फसल का लाभ लेंगे।

व्यक्तिगत स्तर पर भी किसानों के जीवन में उल्लेखनीय परिवर्तन आए। इस क्रम में नेहरुलाल एवं कांतिलाल बताते हैं कि किसानों ने पहले केवल वर्षा आधारित खेती पर निर्भर रहते हुए सीमित उत्पादन किया करते थे, लेकिन अब वे दो से तीन फसलें लेने में सक्षम हो गए हैं। 15 से 20 किसानों के आय सालाना 8000 से 10000 तक वृद्धि हुई और वे अपने परिवार की जरूरतों को बेहतर ढंग से पूरा कर पा रहे हैं। इसी प्रकार, पशुपालकों को पशु सेट मिलने से उनके पशुधन की देखभाल बेहतर हुई, पीछले एक वर्ष से विगत वर्ष की तुलना में पशुओं को खुरपका — मुंहपका एवं बुखार व निमोनिया में कमी आई है इसके साथ ही स्थानीय खाद में बढ़ोतरी हुई और पारम्परिक खेती के लिए खाद के लिए उकड़ा जैसे स्रोत विकसित हुए और इस वर्ष रबी में 103 बीघा जमीन पर इसी खाद का उपयोग किया गया। इस पूरी प्रक्रिया में ग्राम स्वराज समूह की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। संगठन ने केवल मार्गदर्शन ही नहीं दिया, बल्कि वंचित समुदाय को संगठित करने, उन्हें उनके अधिकारों और संभावनाओं के प्रति जागरूक करने तथा सरकारी विभागों से जोड़ने का कार्य भी किया। संगठन के छगन लाल बताते हैं कि योजनाएँ केवल कागज़ों तक सीमित न रहें, बल्कि उनका वास्तविक लाभ जरूरतमंद लोगों तक पहुँचे। संगठन के निरंतर सहयोग से ग्रामीणों में आत्मविश्वास बढ़ा और वे अपने विकास के लिए स्वयं पहल करने लगे।

आज ग्राम बोरी-पी एक ऐसे उदाहरण के रूप में सामने आया है, जहाँ संगठित प्रयासों से समग्र विकास संभव हुआ है। यह कहानी स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि जब समुदाय जागरूक होकर एकजुट होता है, अपनी समस्याओं को पहचानता है और समाधान के लिए संगठित प्रयास करता है, तो वह न केवल सरकारी योजनाओं का लाभ उठा सकता है, बल्कि अपने भविष्य को भी सशक्त बना सकता है। ग्राम बोरी-पी के किसान आज केवल परंपरागत किसान नहीं रहे, बल्कि वे जागरूक, आत्मनिर्भर और प्रगतिशील किसान बन चुके हैं। वे नई तकनीकों से अपनाने, संसाधनों का बेहतर उपयोग करने और सामूहिक निर्णय लेने में सक्षम हैं। यह बदलाव न केवल उनके आर्थिक जीवन में, बल्कि उनके सोच और दृष्टिकोण में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।



डायरिया (दस्त) : लक्षण, प्रभाव और स्थानीय व पारंपरिक उपचार

गर्मी का मौसम बच्चों के स्वास्थ्य के लिए सबसे संवेदनशील समय होता है। इस दौरान तेज धूप, पानी की कमी, दूषित जल स्रोत और भोजन की असुरक्षा के कारण डायरिया (दस्त) के मामले तेजी से बढ़ते हैं। डायरिया केवल एक साधारण बीमारी नहीं है, बल्कि यह बच्चों में कुपोषण, कमजोरी, बार-बार बीमारी और विकास में रुकावट का बड़ा कारण बनता है।

हमारे समुदायों में पारंपरिक ज्ञान, घरेलू उपचार और सामुदायिक सहयोग की मजबूत परंपरा रही है। यदि इनका सही उपयोग आधुनिक स्वास्थ्य समझ के साथ किया जाए, तो डायरिया जैसी बीमारी को काफी हद तक रोका और नियंत्रित किया जा सकता है।

डायरिया क्या है? — डायरिया वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति को बार-बार पतले या पानी जैसे दस्त होते हैं। इससे शरीर से पानी और जरूरी लवण (सोडियम, पोटैशियम) तेजी से बाहर निकल जाते हैं, जिससे शरीर में पानी की कमी (डिहाइड्रेशन) हो जाती है।

गर्मी में बच्चों पर डायरिया का प्रभाव

1	शारीरिक प्रभाव	<ul style="list-style-type: none"> शरीर में पानी की तेजी से कमी (डिहाइड्रेशन)। अत्यधिक कमजोरी और थकान। वजन में कमी। बार-बार बीमार पड़ना।
2	पोषण पर प्रभाव	<ul style="list-style-type: none"> भूख कम हो जाती है। खाया हुआ भोजन शरीर में सही से नहीं लग पाता।
3	विकास पर प्रभाव	<ul style="list-style-type: none"> कुपोषण का खतरा बढ़ता है। मानसिक और शारीरिक विकास प्रभावित होता है। बच्चे सुस्त और कम सक्रिय हो जाते हैं।

डायरिया के प्रमुख लक्षण

- बार-बार पतले दस्त (दिन में 3 बार या अधिक)
- उल्टी होना
- बार-बार प्यास लगना
- मुंह और जीभ का सूखना
- आंखों का धंसना
- पेशाब कम होना या पीला आना
- बच्चा सुस्त या चिड़चिड़ा हो जाना



गंभीर लक्षण (तुरंत ध्यान देने योग्य) —

(अ) खून वाले दस्त (ब) बच्चा पानी पीने से मना करें

(स) तेज बुखार (द) बार-बार उल्टी आना

डायरिया के मुख्य कारण—डायरिया मुख्य रूप से स्वच्छता और खान-पान से जुड़ी समस्या है—

- दूषित या असुरक्षित पानी पीना
- बासी या खुला रखा भोजन खाना
- हाथ न धोना (खाने से पहले/शौच के बाद)
- खुले में शौच
- मक्खियों के संपर्क में आया भोजन
- गंदे बर्तनों का उपयोग

डायरिया से मानसिक और शारीरिक विकास प्रभावित होता है, बच्चे सुस्त और कम सक्रिय हो जाते हैं।

डायरिया (दस्त) में बच्चों के लिए घरेलू एवं स्थानीय उपाय

ओ.आर.एस. (जीवनरक्षक घोल)	<ul style="list-style-type: none"> लीटर उबला व ठंडा पानी लें। 6 छोटी चम्मच चीनी आधा छोटी चम्मच नमक मिलाएं। हर 5-10 मिनट में बच्चे को थोड़ा-थोड़ा पिलाएं। शरीर में पानी और लवण की कमी को पूरा करता है। 	मट्ठा (छाछ)	<ul style="list-style-type: none"> छाछ में नमक और भुना जीरा मिलाकर दें। पेट को ठंडक देता है। पाचन को सुधारता है। शरीर में जरूरी लवणों की पूर्ति करता है।
पका हुआ केला	<ul style="list-style-type: none"> दस्त को नियंत्रित करने में मदद करता है। शरीर को ऊर्जा और ताकत देता है। छोटे बच्चों को मेश करके देना बेहतर है। 	बेल का शरबत	<ul style="list-style-type: none"> पेट के रोगों में उपयोगी। दस्त को नियंत्रित करता है। शरीर को ठंडक देता है।
चावल का मांड (पानी)	<ul style="list-style-type: none"> चावल उबालने के बाद बचा पानी। हल्का, सुपाच्य और पौष्टिक। शरीर में पानी की कमी को पूरा करता है। 	केरी का पना (कच्चे आम का पेय)	<ul style="list-style-type: none"> गर्मी और डिहाइड्रेशन से बचाव। शरीर में पानी व लवण संतुलन बनाए रखना। बच्चों को ताजगी और राहत देता है।
नींबू पानी	<ul style="list-style-type: none"> पानी में नींबू, नमक, पृथीना और थोड़ी चीनी मिलाकर दें। शरीर में इलेक्ट्रोलाइट्स की पूर्ति करता है। पाचन में मदद करता है। 	हल्का काढ़ा (सौंफ, अजवाइन, तुलसी)	<ul style="list-style-type: none"> पेट दर्द और संक्रमण में राहत। पाचन को सुधारता है। बच्चों को बहुत हल्का और कम मात्रा में दें।

महत्वपूर्ण सावधानियां — बच्चे को बार-बार थोड़ी मात्रा में तरल देते रहें, केवल साफ और उबला हुआ पानी उपयोग करें, हाथ और बर्तनों की सफाई रखें, यदि बच्चे को लगातार उल्टी, खून वाला दस्त या अत्यधिक कमजोरी हो तो तुरंत स्वास्थ्य केंद्र ले जाएं बच्चों की देखभाल कैसे करें?

डायरिया के दौरान बच्चों की देखभाल सबसे महत्वपूर्ण है —

बच्चे को बार-बार तरल पदार्थ दें (ORS, पानी, मांड) स्तनपान बिल्कुल बंद न करें, इसे जारी रखें।

- हल्का व सुपाच्य भोजन दें (खिचड़ी, दाल, केला)।
- बच्चे को साफ और ठंडी जगह पर रखें।
- बच्चे को आराम करने दें।

क्या नहीं करना चाहिए?

1. बच्चे को भूखा न रखें।
2. गंदापानी या बासी भोजन न दें।
3. बिना सलाह के दवाइयां न दें।
4. दस्त रुकने के बाद भी देखभाल बंद न करें।

कब डॉक्टर के पास जाएं?

- बच्चा बहुत कमजोर हो जाए।
- 2-3 दिन में सुधार न हो।
- बार-बार उल्टी हो रही हो।
- खून वाले दस्त आ रहे हों।
- बच्चा पानी पीने से मना करें।

समुदाय की भूमिका — डायरिया से बचाव पूरे समुदाय की सामूहिक जिम्मेदारी है, खासकर हमारे क्षेत्रों में जहाँ स्वच्छ पानी और सफाई की चुनौतियाँ अधिक होती हैं। समुदाय को मिलकर स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए और गांव में नियमित साफ-सफाई बनाए रखनी चाहिए। खुले में शौच को रोकना और कचरे का सही निपटान करना बीमारी के फैलाव को रोकने में महत्वपूर्ण है। आंगनवाड़ी व स्कूल के माध्यम से हाथ धोने, साफ पानी पीने और सुरक्षित भोजन की आदतों पर जागरूकता बढ़ाना जरूरी है। साथ ही, स्थानीय पारंपरिक उपाय— जैसे ओआरएस, मांड, छाछ, केरी का पनाकू को साझा करना समुदाय को आत्मनिर्भर बनाता है। जब पूरा गांव मिलकर प्रयास करता है, तभी डायरिया जैसी बीमारियों पर प्रभावी नियंत्रण संभव होता है।

महिला और युवा समूह की भूमिका— महिला और युवा समूह डायरिया से बचाव में बदलाव के वाहक बनते हैं। महिला समूह माताओं को बच्चों की देखभाल, पोषण और स्वच्छता के बारे में जागरूक करते हुए उन्हें ओआरएस देने और सही देखभाल के लिए प्रशिक्षित कर सकते हैं, युवा समूह घर-घर जाकर जानकारी फैलाने, स्वच्छता अभियान चलाने और



कृषि एवं आदिवासी स्वराज क्रियान्वयन इकाई-हिरण

वाते पत्रिका के सभी साधियों को जय गुरु !!

प्रिय साधियों, आज दुनिया एक ऐसे दौर से गुजर रही है जहाँ बढ़े-बढ़े देश ऊर्जा संसाधनों पर नियंत्रण के लिए संघर्ष कर रहे हैं। कभी कहा जाता था कि तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए होगा, लेकिन वर्तमान परिस्थितियाँ संकेत देती हैं कि यह संघर्ष ऊर्जा के लिए पहले भी हो सकता है। विश्व के देश अलग-अलग गुटों में बंटे हुए हैं और शक्तिशाली देश अपनी शर्तें मनवाने में लगे हैं, जबकि अन्य देश अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

ऐसे समय में हमें अपने गाँव, परिवार और समुदाय को ऊर्जा स्वराज की दिशा में आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। यदि हम आज से ही आत्मनिर्भर बनने का संकल्प लें, तो भविष्य में हम बाहरी संकटों से अपने गाँव को सुरक्षित रख सकते हैं।

गर्मी से बचाव — हमारी जिम्मेदारी

इस वर्ष गर्मी का प्रकोप अधिक है और आने वाले समय में इसके और बढ़ने की संभावना है। ऐसे में हमें कुछ सावधानियाँ अपनानी आवश्यक हैं —

- बच्चों को तेज धूप में बाहर जाने से रोके।
- पशुओं को दिन में कम से कम 3 बार पानी पिलाएं।
- बच्चे और बुजुर्ग गर्मी से जल्दी प्रभावित होते हैं, उनका विशेष ध्यान रखें।
- लू लगने के लक्षण जैसे चक्कर आना, उल्टी, सिरदर्द, अत्यधिक पसीना और थकान से सतर्क रहें।
- हृदय, किडनी और शुगर के मरीजों को विशेष सावधानी की जरूरत है।
- पशुओं के लिए छाया और ठंडे स्थान की व्यवस्था करें।
- घर में ORS अवश्य रखें और आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करें।

जायद की खेती —

इस वर्ष मूंग की फसल अच्छी रही है। किसानों द्वारा जल प्रबंधन के प्रयासों के कारण कुशलगढ़ और सज्जनगढ़ ब्लॉकों में लगभग 25-30 प्रतिशत किसानों ने तीसरी फसल के रूप में मूंग और सब्जियों की खेती की है, जो सराहनीय है। आगामी वर्ष में इसे 50 प्रतिशत किसानों तक



साफ पानी और सुरक्षित भोजन के महत्व को समझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे आंगनवाड़ी व स्कूल के साथ मिलकर जागरूकता गतिविधियाँ भी आयोजित कर करें। हमारे समूहों की सक्रिय भागीदारी से हर परिवार तक सही जानकारी पहुँचती है और पूरा समुदाय स्वस्थ व जागरूक बनता है।

सामुदायिक प्रयास और ग्राम स्वराज

हिरण इकाई के अंतर्गत कुशलगढ़ और सज्जनगढ़ ब्लॉक के 276 गांवों में ग्राम स्वराज समूह की बैठकों आयोजित की गईं। इन बैठकों में निम्न विषयों पर चर्चा कर कार्य योजना बनाई गई।

- शुद्ध पेयजल की व्यवस्था
- जायद फसल की सुरक्षा हेतु आवारा पशुओं की रोकथाम
- मनरेगा के माध्यम से रोजगार उपलब्ध कराना
- सामाजिक सुधार से जुड़े निर्णयों का पालन सभी कार्यों की जिम्मेदारी समूह के सदस्यों में बांटी गई, जिससे सहभागिता और जिम्मेदारी दोनों बढ़ी।

सीखते किसान, बढ़ती उत्पादन क्षमता

सक्षम समूह की बैठकों में 1x1 मीटर प्लॉट के माध्यम से उत्पादन आकलन, बीज संरक्षण, दस परणी और एकीकृत कीट प्रबंधन पर प्रदर्शन किए गए। फार्मर फील्ड स्कूल के माध्यम से किसानों को व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें सिंचाई की सही तकनीक, क्यारी बनाकर सिंचाई, उचित समय (शाम) और अंतराल पर पानी देने जैसे महत्वपूर्ण विषय शामिल रहे।



बाल स्वराज : बच्चों की भागीदारी

बाल स्वराज समूहों में बच्चों को नई कक्षा में प्रवेश, किताबों की देखभाल और गर्मी में नियमित



पढ़ाई के लिए प्रेरित किया गया। साथ ही खेल-खेल में सीखने की गतिविधियाँ करवाई गईं और दोपहर में बाहर न निकलने की सलाह दी गई।

रोजगार और जल संरक्षण

मनरेगा के तहत फॉर्म 6 भरवाकर 2577 परिवारों को रोजगार से जोड़ा गया। पुराने जल स्रोतों की सफाई और पुनर्जीवन पर विशेष जोर दिया जा रहा है। किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य मिले, इसके लिए स्थानीय स्तर पर हाट बाजार और सब्जी बाजार शुरू किए गए हैं और किसान उसका भरपूर फायदा उठा रहे हैं।

ग्रामस्वराज समूह के नेत्रत्व में समुदाय द्वारा जिम्मेदारी लेकर जल संरक्षण हेतु, परंपरागत जलस्रोतों की साफ-सफाई हेतु हलमा किया गया, सज्जनगढ़ के मस्का महुड़ी में महिलाओं को बैठक करने हेतु स्थान के अभाव में उन्होंने मिलकर हलमा के माध्यम से एक पेड़ के चारों ओर चबूतरा बना दिया और चबूतरा बनाने के बाद उन्होंने इसी चबूतरा पर अपने बैठक की, काफी सराहनीय कार्य किया है, इस माह इकाई में कुल 65 हलमा हुए।

पेयजल और पशु स्वास्थ्य

पेयजल स्रोतों का सर्वे कर उनकी स्थिति जानने और सुधार के लिए कदम उठाए गए। खराब हैंडपंपों की सूची बनाकर विभाग को सौंपी गई, जिस पर जल्द सुधार का आश्वासन मिला है। पशुपालन विभाग के सहयोग से 65 गांवों में खुरपका- मुंहपका टीकाकरण अभियान सफलतापूर्वक चलाया गया, जिसमें ग्राम स्वराज समूहों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

खरीफ की तैयारी

नया वित्तीय वर्ष शुरू होते ही किसानों ने खरीफ



फसल की तैयारी शुरू कर दी है।

- गहरी जुताई
 - खेतों में खाद डालना
 - खेतों कि साफ सफाई
 - मेड़बंदी सुधारना
 - जल स्रोतों की सफाई और गहरीकरण
- ये सभी कार्य तेजी से चल रहे हैं। इसके साथ ही सामाजिक परंपराएं जैसे शादियाँ, नोतरा और मेल-मिलाप भी जारी हैं, जो हमारे सामाजिक जीवन को मजबूत बनाते हैं। अंत में, यदि हम सभी मिलकर सामुदायिक प्रयास, जल प्रबंधन और आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ते रहें, तो न केवल हमारा गांव बल्कि हमारा भविष्य भी सुरक्षित और समृद्ध होगा।

फलदारवाड़ी : आदिवासी परिवारों के लिए पोषण, आय और आत्मनिर्भरता का आधार



मध्यप्रदेश के झाबुआ (थांदला और पेटलावद) तथा रतलाम (बाजना और सैलाना) क्षेत्र में आदिवासी समुदायों की आजीविका को सशक्त बनाने की दिशा में वाग्धारा द्वारा कार्य किया जा रहा है। संस्था गांव स्तर पर आदिवासी



किसानों को फलदार वाड़ी विकसित करने के लिए न केवल प्रेरित कर रही है, बल्कि उनकी मांग के अनुरूप आम, अमरुद, नींबू, चीकू, अनार, कटहल, संतरा और पपीता जैसे पौधे उपलब्ध कराकर उन्हें पारंपरिक खेती के साथ आय और पोषण के स्थायी स्रोत से जोड़ रही है। इस पहल की विशेषता यह है कि यह केवल पौध वितरण तक सीमित नहीं है, बल्कि किसानों को वाड़ी की स्थापना, देखभाल और उससे अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए निरंतर मार्गदर्शन भी दिया जा रहा है। गांवों में बैठकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से यह समझ विकसित की जा रही है कि खेत में फलदार पौधों को शामिल करने से किसान वर्षभर विभिन्न फसलों के साथ फल और अन्य उत्पाद भी प्राप्त कर सकते हैं। यह बहु-स्तरीय खेती प्रणाली न केवल जोखिम को कम करती है, बल्कि आजीविका को स्थिर और विविध बनाती है।

समस्या को कम करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त, पेड़ों की संख्या बढ़ने से पर्यावरणीय लाभ भी स्पष्ट होंगे—मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि, जल संरक्षण और जैव विविधता का संरक्षण। फलदार वाड़ी के अनेक प्रत्यक्ष लाभ भी सामने आते हैं। यह परिवार को पोषण सुरक्षा प्रदान करती है, क्योंकि फल विटामिन और खनिजों से भरपूर होते हैं। आय में वृद्धि होती है, क्योंकि फलदार पेड़ लंबे समय तक उत्पादन देते हैं और अलग-अलग मौसम में बिक्री के अवसर प्रदान करते हैं। जलवायु अनिश्चितता के समय यह एक सुरक्षा कवच की तरह काम करती है, क्योंकि वृक्ष सूखे और बदलती परिस्थितियों को अपेक्षाकृत बेहतर सहन करते हैं। साथ ही, मिट्टी और पर्यावरण संरक्षण में भी वाड़ी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है—पेड़ मिट्टी के कटाव को रोकते हैं और जैविक खाद का निर्माण करते हैं।



देखा जाए तो यह पहल केवल कृषि सुधार का प्रयास नहीं है, बल्कि क्षेत्र में एक व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की दिशा में कदम है। यह आदिवासी समुदायों को आत्मनिर्भर बनाने, स्थानीय स्तर पर मजबूत अर्थव्यवस्था विकसित करने और प्रकृति के साथ संतुलित विकास को बढ़ावा देने का माध्यम बन रही है। वाग्धारा संस्था समुदाय के साथ मिलकर इस कार्यक्रम को सफल बनाने और अधिक से अधिक किसानों को इससे जोड़ने के लिए निरंतर प्रयासरत है, ताकि स्थानीय संसाधनों और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से टिकाऊ विकास संभव हो सके।



वागड़ रेडियो 90.8 FM
वाग्धारा, कुपड़ा

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें —
वागड़ रेडियो 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वाग्धारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
फोन नम्बर है - 9460051234 ई-मेल आईडी - radio@vaagdhara.org

यह "वाते वाग्धारा नी" केवल आंतरिक प्रसारण है।